संस्कृति और नैतिकता के बदलते स्वरूप का अध्ययन (वैश्वीकरण, तकनीकी प्रगति के संदर्भ में)

पंक्षी देवी, शोधार्थी शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, टोंक, राजस्थान
डॉ. नीति त्रिवेदी, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, टोंक, राजस्थान

सार

संस्कृति और नैतिकता का प्रतिच्छेदन अध्ययन का एक गतिशील और विकसित क्षेत्र है, क्योंकि सामाजिक मूल्य, मानदंड और नैतिक सिद्धात उन सांस्कृतिक संदर्सी से अभिन्न रूप से जुड़े हुए है जिनमें वे उभरते है। विविध सास्कृतिक ढाँचों के भीतर नैतिकता की बदलती प्रकृति की खोज करता है। इस बात पर जोर देता है कि वैश्वीकरण, तकनीकी प्रगति और सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तन नेतिक अवधारणाओं को कैसे प्रभावित करते हैं। ऐतिहासिक रूप से, नैतिकता अक्सर धार्मिक, पारिवारिक या समुदाय-आधारित संरचनाओं में निहित थी, लेकिन वैश्विक संचार, प्रवास और अंतर्संबंध में तेजी से बदलाव के साथ, नए नैतिक प्रतिमान उभर रहे है। पारंपरिक नैतिक प्रणालियों पर इन परिवर्तनों के निहितार्थों की व सार्वभौमिक नैतिक मानकों और सांस्कृतिक रूप से विशिष्ट नैतिक प्रथाओं के बीच तनाव की जाँच करता है। समकालीन उदाहरणों का विश्लेषण करके, यह नैतिक निर्णयों की तरलता और उन तरीकों पर प्रकाश डालता है। जिनसे सस्कृति विकसित होते नैतिक परिदृश्य को आकार देती है अंततः, इस प्रपत्र के अध्ययन का उद्देश्य इस बात की सूक्ष्म समझ प्रदान करना है कि कैसे संस्कृति, वैश्विक परिवर्तन के सामने नैतिक मूल्यों को चुनौती देती है, और उन्हें सुदृढ बनाती है।